आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय एच.ओ. पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

(मुद्रण तारीख :- 01.08.2016) ■ अंक-603 ■ तारीख- 02 अगस्त 2016, श्रावण कृष्ण पक्ष -15 ■ मंगलवार ■ उदयपुर ■ कुल पृष्ठ-2 ■ मूल्य -1 रूपया (पृष्ठ-1)

श्री सत्यसांई -अनमोल वचन

सुगंध

यदि किसी मनुष्य के हाथ में चंपा का फूल होगा तो वह जहाँ भी जाएगा उसकी सुगंध साथ ले जाएगा और यदि उसके पास कोई दुर्गन्ध युक्त वस्तु होगी तो दुर्गन्ध फैलाएगा। अच्छे–बुरे विचारों की भी यही परिस्थिति है। विचार अपने चारों ओर शुभाशुभ तरंगें फैलाते हैं। विचारों में इतना बल है कि यदि उन्हें महान उद्देश्य प्राप्त करने हेतु प्रयोग में लाया जाए तो सारे विश्व पर प्रभाव सिद्ध होता है।

56 भोग नैवेध

श्रीकृष्ण की उपासना अन्य देवों की तुलना में सबसे अधिक की जाती है। श्रीकृष्ण के विषय में यह मान्यता है, कि ईश्वर के सभी तत्व एक ही अवतार अर्थात भगवान श्री कृष्ण में समाहित है। गिरिराज को भगवान श्रीकृष्ण के जन्म उत्सव के अलावा अन्य मुख्य अवसरों पर 56 भोग का नैवेध अर्पित किया जाता है जिसमें पूरी, परांठा, रोटी, चपाती, मक्की की रोटी, साग, अन्य प्रकार की तरकारी, साग, अंकुरित, अन्न,उबाला हुआ भुट्टा या भुना हुआ, सभी प्रकार की दालें, कढी, चावल, मिली–जुली सब्जी, सभी पकवान, मिठाई, पेड़ा, खीर, हलवा, गुलाबजामुन, जलेबी, इमरती, रबड़ी, मीठा दूध, मक्खन, मलाई, मालपुआ, पेठा, मीठी पूरी, कचौरी, समोसा, चावल, बाजरे की खिचड़ी, दलिया,ढोकला, नमकीन, मुरमुरा, भेलपुरी, चीले, (मीठे, नमकीन दोनों) अचार विशेषकर टींट का, चाट, टिक्की, चटनी, आलू ,पालक आदि के पकौड़े, बेसन की पकौड़ी, मठ्ठा, छाछ, लस्सी, रायता, दही, मेवा, मुरब्बा, सलाद, नीम्बू में घिसी हुयी मूली, फल, पापड़, पापडी, पान, इलायची, सौंफ, लौंग, शुद्ध बिस्कुट, गोली, टॉफी, चाकलेट, गोल–गप्पा, उसके खट्टे मीठे जल, मठरी–शक्कर पारा, खील, बताशा, आमपापड़, शहद, सभी प्रकार की गज्जक, मूंगफली,पट्टी, रेवड़ी, गुड,शरबत, जूस, खजूर, कच्चा नारियल का भोग लगाया जाता है।

महिला सशक्तिकरण की मिसाल :- गोवा

हमारे देश को लेकर अक्सर ये सोच रहती है कि यहाँ पुरुष सोच हावी रहती है। पर अब इस सोच में बदलाव आ रहा है। गोवा देश का ऐसा राज्य है जहाँ कि 93.8 प्रतिशत महिलाएँ ही घर के फैसले लेती हैं। बच्चा कहाँ पढ़ेगा ? घर में क्या आएगा ? यहाँ तक कि टीवी में कौन सा सीरियल चलेगा ये सभी निर्णय लेने में महिलाओं की ही चलती है।

दरअसल गोवा में राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस) में यह पाया गया है कि राज्य में 93.8 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी घर के फैसलों में होती है। एनएफएचएस आर्थिक सर्वेक्षण 2015–16 का एक हिस्सा है जिसे यहाँ चल रहे राज्य विधानसभा सत्र के दौरान पेश किया गया। हालिया सर्वेक्षण के आँकड़ों से यह संकेत मिलता है कि पिछले दशक से इस बार घर के फैसले लेने में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है।

वर्ष 2005–06 के दैरान 91.1 प्रतिशत महिलाओं को अपने घर के फैसलों में बोलने का अधिकार था जो एनएफएचएस 2015–16 के दौरान अब बढ़कर 93.8 प्रतिशत (94.5 प्रतिशत शहरी क्षेत्र और 92.6 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र) हो गया है। इसके अलावा, तटीय राज्य में वैवाहिक हिंसा में भी कमी आई है। एनएफएचएस में यह पता चला कि 12.9 प्रतिशत महिलाओं ने वैवाहिक हिंसा की सूचना दी, जबकि इससे पहले के दशक में 16.8 प्रतिशत महिलाओं ने ऐसी सूचना दी थी।

इसके अतिरिक्त, राज्य में 33.9 प्रतिशत महिलाओं के पास अपना खुद का घर है या अन्य के साथ संयुक्त रूप से घर पर मालिकाना हक है।

हरियाली अमावस्या

श्रावण कृष्ण पक्ष की अमावस्या को हरियाली अमावस्या के रूप में मनाया जाता है। यह त्योहार सावन में प्रकृति पर आई बहार की खुशियों का दिन है। इसका मुख्य उद्देश्य लोगों को प्रकृति के करीब लाना है। देश के कई भागों विशेष कर उत्तर भारत में इसे एक धार्मिक पर्व के रूप में मनाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन हर व्यक्ति को एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए। शास्त्रों में आम, आँवला, पीपल, वट वृक्ष और नीम के पौधों को रोपने का विशेष महत्व बताया गया है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार वृक्षों में देवताओं का वास बताया गया है। शास्त्रों के अनुसार पीपल के वृक्ष में त्रिदेव यानी ब्रह्मा, विष्णु और शिव का वास होता है। इसी प्रकार आँवले के पेड़ में लक्ष्मी नारायण के विराजमान होने की परिकल्पना की गई है। इसके पीछे वृक्षों को संरक्षित रखने की भावना निहित है। पर्यावरण को शुद्ध बनाए रखने के लिए ही हरियाली अमावस्या के दिन वृक्षारोपण करने की प्रथा बनाई गई। इस दिन कई शहरों और गाँवों में मेले का आयोजन किया जाता है।

इसके अलावा हरियाली अमावस्या के दिन पीपल के वृक्ष की पूजा करने फेरे लगाने और मालपुआ का भोग बनाकर चढ़ाने की परंपरा भी है। पर्यावरण को शुद्ध बनाए रखने के लिए ही हरियाली अमावस्या के दिन वृक्षारोपण करने की प्रथा बनी। शास्त्रों में कहा गया है कि एक पेड़ 10 पुत्रों के समान होता है। पेड़–पौधों का सानिध्य हमारे दैनिक तनाव और उलझनों को कम करता है।

अमावस्या के दिन को पितृकार्यों के लिये श्रेष्ठ माना गया है। सूर्य और चन्द्रमा दोनों ग्रह अमावस्या के दिन एक ही राशि में आ जाते हैं यानी चन्द्रमा और सूर्य जब तक दोनों एक राशि में रहते हैं तब तक ही अमावस्या रहती है। इसलिये इस दिन पितरों के लिये श्राद्ध और तर्पण के कार्य संपन्न किए जाते हैं। अमावस्या में दान का भी विशेष महत्व बताया गया है। हिंदू परंपरा में पूर्णिमा और अमावस्या के दिन पुण्यतोया नदियों में स्नान का भी विशेष महत्व माना गया है। श्रावण मास की इस अमावस्या पर भी गंगा, यमुना और नर्मदा नदियों में हजारों श्रद्धालु डुबकी लगाकर पुण्य अर्जित करते हैं।

राजा राम मोहन राय

जिन्होनें हमें आधुनिकता की राह दिखाई

राजा राम मोहन राय का जन्म 22 मई 1772 को बंगाल के हुगली जिले के राधा नगर गाँव में हुआ था। पिता का नाम रमाकान्त राय एवं माता का नाम तारिणी देवी था। उनके प्रपितामह कृष्ण चन्द्र बनर्जी बंगाल के नवाब की सेवा में थे। उन्हें राय की उपाधि प्राप्त थी। ब्रिटिश शासकों के समक्ष दिल्ली के मुगल सम्राट की स्थिति स्पष्ट करने के कारण सम्राट ने उन्हें राजा की उपाधि से विभूषित किया था।

राजा राम मोहन राय की शिक्षा और विज्ञान में गहरी आस्था थी। आपके शिक्षा संबन्धी विचार रचनात्मक थे। 1816 में आपने कलकत्ता में अंग्रेजी स्कूल की स्थापना की। ये पहला अंग्रेजी स्कूल था जिसका व्यय पूर्णतः भारतीयों द्वारा वहन किया जाता था। आपके प्रयासों से 1822 तथा 1823 में हिन्दू कॉलेज की स्थापना हुई। राजा राम मोहन राय ने अपने मस्तिष्क पर पूर्वाग्रहों को कभी भी हावी होने नहीं दिया। उनका मानना था कि अंग्रेजी शिक्षा और पश्चिमी शिक्षा भारत के लिये लाभदायक है। आपने वेदों तथा उपनिषदों का बंगाली तथा अंग्रेजी में अनुवाद किया। आपने इस बात का खण्डन किया कि ईसाई स्कूल में बाइबिल पढाने से जाति भ्रष्ट होने का डर रहता है। इस संदर्भ में अपने विचार प्रकट करते हुए कहते हैं कि "किसी भी धर्म का ग्रन्थ पढ़ने से जाति भ्रष्ट होने का प्रश्न ही नहीं उठता मैंने बहुत बार बाइबिल और कुरान शरीफ को पढा मैं न ईसाई बना और न ही मुसलमान बना। बहुत से यूरोपीय गीता तथा रामायण पढते हैं, वो तो हिन्दू नहीं हुए।"

समाज सुधारक राजा राम मोहन राय का मानना था कि राजनीतिक विकास का तब तक कोई मूल्य नहीं है जब तक समाज का सुधार या विकास नहीं होगा। समाज सुधार में स्त्री शिक्षा के वे पक्षधर थे। अतः नारी शिक्षा और स्त्रियों के अधिकारों पर विशेष बल दिये । राजा राम मोहन राय पहले भारतीय हैं जिन्होंने ये कहा कि पिता की सम्पत्ति में बेटी का भी कानूनी हक होना चाहिये। नारी पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ आपने आवाज उठाई थी। विधवा विवाह के समर्थक थे। बाल विवाह के विरोधी थे। राजा राम मोहन राय परम्परा के खिलाफ थे क्योंकि उनका कहना था कि परम्परा के तहत कई बार अविवेक पूर्ण कार्य को श्रद्धा का विषय बना दिया जाता है। सामाजिक समस्याओं के प्रति सदैव जागरूक रहे। वे जमींदारों को किसानों का शोषक कहते थे। 15 नवम्बर 1830 को समुद्री रास्ते से इंग्लैण्ड के लिये रवाना हुए। अप्रैल 1832 को इंग्लैण्ड पहुँचे जहाँ अंग्रेजों ने आपका स्वागत स्नेह और सम्मान के साथ किया। 27 सितंबर 1833 को ब्रिस्टल में इस नश्वर संसार का त्याग करके ब्रह्म लोक में विलीन हो गये।

अंगूर खाने के फायदे

- अंगूर दमा के रोगियों के लिए बहुत अच्छा होता है दमा को ठीक करने में अंगूर काफी सहायक होता है।
- अंगूर हमारे हृदय के लिए बहुत अच्छा होता है दिल के रोगियों को अंगूर खाने से बहुत फायदा मिलता है।
- अंगूर का जूस माइग्रेन के दर्द को ठीक करने में काफी सहायक होता है।
- ये कब्ज को भी दूर कर देता हैअंगूर बदहजमी को भी ठीक कर देता है।
- अंगूर शरीर के गुर्दों को स्वस्थ रखता है।
- अभी हाल के ही अध्ययन से पता चला है की अंगूर ब्रेस्ट कैंसर को रोकने में मदद करता है।
- अंगूर में एंटी कैंसर की विशेषता पाई जाती है। जिससे कैंसर को ठीक करने में मदद मिलती है।
- लाल अंगूरों में एंटी बेक्टेरीयल की विशेषता पाई जाती है। जो की इन्फेक्शन से बचाने में हमारी मदद करता है।

मानव मन के बोल

गतांक से आगे...

❖ कार्य के प्रति जिम्मेदारी ❖

बीच में नारायण सेवा में आये थे और पाली –मारवाड़ में तो पूसाराम जी, उनसे कभी मिलना होगा तो मिलेंगे। पाली–मारवाड़ में एल.जी. से हेड ऑफिस बनने का शुभ समाचार आया तो हेड ऑफिस में जब एकाउट डिपार्टमेंट होता है। तो उस समय, मैंने पोस्ट मास्टर साहब कश्यप साहब को कहा– मेरा ट्रांसफर एकाउंट डिपार्टमेंट में कर दीजिये एज ए क्लर्क। उन्होंने कहा–कैलाशजी, इधर ऑर्डर बाबू भी आप हो, आपको बीच में रजिस्ट्री भी करनी होगी, फिर भी आपको काम सीखने के लिये उधर कर दें, तो तीनों काम आपको करने पडेंगे। मैंने कहा जरूर करूँगा, बड़ी खुशियाँ थी, काम करने में कोई तकलीफ भी नहीं होती थी। मुझे याद है वो कक्ष, टेलीग्राम से पहले वाला कक्ष, जो एकाउंट्स का कक्ष था। पुसाराम जी ने कहा–कैलाश जी, मैं आई.पी.ओ. की परीक्षा दे रहा हूँ, इन्सपेक्टर ऑफ पोस्ट ऑफिस की। मेरी थोड़ी पढ़ाई भी रहेगी, एक महीने बाद ही परीक्षा है तो सारा काम ज्यादा आपको ही करना पडेगा, मैंने कहा–करूँगा साहब। उसी समय 1974 में ही पी.ओ.आर.एम.एस. मुझे मालूम है। पाली–मारवाड़ में जब लश्करी साहब हमारे सुपरिटेंडेंट साहब हुआ करते थे। मैं परीक्षा दे रहा था, पी.ओ.आर.एम.एस. एकांउटेंट का लास्ट पेपर था–तीसरे दिन का। अचानक मुझे लगा कि कोई टेलीग्राम आया कैलाश जी के नाम का, ऐसी कोई बात हो रही थी। मैं चौंका! मैंने कहा–सर, बोले कुछ नहीं कैलाश जी–कुछ नहीं है, आपका तो कुछ नहीं, आप तो परीक्षा दीजिये। परीक्षा के पेपर पूरे हो गये। जैसे ही मैंने कॉपी दी, उन्होंने कहा –कैलाश जी, आपके लिये एक दुःखद समाचार है, आपके ससुरजी का स्वर्गवास हो गया। आपकी छुट्टी मैं स्वीकृत कर रहा हूँ, आप कमला जी को लेकर अजमेर चले जायें। बहुत रोया, बहुत दुःखी हुआ कमला जी बहुत रोयी हमारे परम् पूज्य ज्ञानी जी, पूरी दुनिया उनको ज्ञानी जी बोलती थी। मेरे आदरणीय ससुर साहब, जिन्होंने मेरी धर्मपत्नी कमला जी को जन्म दिया। अजमेर गये, पोस्ट ऑफिस आर.एम.एस. की परीक्षा दे दी थी तो डिविजनल ऑफिस में मेरा ट्रांसफर हो गया था – पाली में डिविजनल ऑफिस में। वहाँ पर कार्य भी बहुत रहता था। रात को 12–12 बजे तक टी.वी. के पास बैठकर काम करता था, ऑफिस के कार्य को घर पर लाता था। ओ.टी. बिल, टी.ए. बिल, सैलेरी बिल सभी पास करने होते थे। उसी समय जय साहब आये थे। बड़े प्रसन्न रहते थे वो कहते थे, बाबूजी–ठीक है ना अच्छा चल रहा है–ना। मैंने थोड़ा कहने की कोशिश की, सर, कुछ कार्य आप कम कर दें, टी.ए. बिल, ओ.टी. बिल. सेलेरी बिल, मेरे पास एकाउंट का पूरा कार्य है। बोले–कैलाश जी, देश भक्ति करनी है, राष्ट्र के नवयुवक हो आप, करते रहो काम। मैंने अन्तर्देशीय पत्र उनको लिखा था, जब वो शिवगंज गये थे। उसमें मैंने सारे आँकडे दिये। सर, मैं काम करना चाहता हूँ, खूब करूँगा, लेकिन वास्तविक समस्या है। उन्होंने वहीं से ऑर्डर कर दिया, ठीक है यह काम दूसरे को दे देते हैं। बड़ी कृपा रही, मेरी कॉनफिडेन्शियल रिपोर्ट तो उन्होंने मुझे बताई, कहा–कैलाश जी, मैंने आपके लिये लिखा है–बेस्ट। सबसे अच्छे हमारे काम करने वाले और कुछ जरूरत हो तो लिख दूँ, मैंने कहा–सर, आपकी कृपा है।

साल भर पहले मैंने किसी एक पर गुस्सा किया था, उसकी अवाज उन्होंने सुनी थी। धीरे से मुस्कुरा कर बोले–कैलाश जी, साल भर पहले आप को एक बार गुस्सा आया था। ऐसा आपको बार–बार तो नहीं आता ना। मैंने कहा–सर, उसके लिये मैं दुःखी हूँ, लज्जित हूँ। क्षमा करें उस समय आ गया था, बार–बार नहीं आता। ये जीवन बहुत अच्छा है, बहुत यादें हैं, जैसे मैंने सहारनपुर में कहा था, मैं बहुत कम समय के लिये क्लर्क रहना चाहता हूँ, भगवान ने मुझे एकाउंटेंट बना दिया, पी.ओ.आर.एम.एस. एकाउंटेंट बना दिया पी.ओ.आर.एम.एस. एकाउंटेंट बोलते थे। वहीं एकाउंटेंट की पोस्टिंग आर.एम.सी. सर्विस में होते थे, हम पोस्ट ऑफिस में होते थे। कितने अच्छे हमारे पोस्टमैन जी, कितने अच्छे हमारे सोर्टिंग पोस्टमैन नानक राम जी। एक बड़ा बक्सा होता था, सारी डाक को हाथ में लेकर तुरन्त छाँटते थे, बीट नम्बर वाइज छाँटते थे। हमारे इन्स्पेक्शन के लिये जयपुर से आते थे, नोमिनल रोल, ए.सी. एकाउंट, बहुत सीखा पोस्ट ऑफिस में।

क्रमशः अगले अंक में...

सम्पादकीय

श्रममेव जयते

बिना मेहनत के जीवन की गति संभव नहीं है। जीवन एक नहर के समान है। जब तक वह परिश्रम की नदी से जुड़ी रहती है, जब तक जल की कलकल से सक्रिय रहती है परन्तु यदि उसे नदी से काट दिया जाए तो फिर वह सूख जाती है। नहर सूख जाने के कारण समीपवर्ती सभी खेत सिंचाई से वंचित रह जाते है, जिसका प्रतिफल बहुत विनाशपूर्ण एवं घातक सिद्ध होता है। इसलिए, हमें अपने जीवन की नहर को परिश्रम रूपी नदी से कभी भी अलग नहीं करना चाहिए। साथ ही यह भी नहीं भूलना चाहिए कि जिस परमपिता परमेश्वर ने इस सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण किया है, उसके प्रति हमें सदा कृतज्ञ रहना चाहिए। इस कृतज्ञतापूर्ण भावना से हमें आंतरिक शक्ति एवं साहस मिलता है। हमारी सम्पूर्ण शक्ति का स्त्रोत वही सर्वशक्तिमान परमपिता परमेश्वर है। वह सागर के समान गंभीर और विशाल है और ब्रह्माण्ड के समान सर्वव्यापी और सर्वज्ञ है। उसके शक्तिपुंज मे से बिन्दु जैसे अंश के सहारें ही हम कठपुतलियों की तरह चलते–फिरतें है। यदि उसकी अंगुलियों से हमारी डोर टूट जाए, तो हमारा अस्तित्व शून्यमय होकर विलीन हो जाएगा।

उसकी असीम शक्ति से हमें बल मिलता है। पग–पग पर बढ़नें के निर्देश को हम महसूस कर पाते है। मिसाल के तौर पर किसी के आक्रमण से हम तुरंत सचेत एवं सतर्क हो जाते है, चाहे वह आक्रमण कितना ही छिप कर अनायास क्यों न किया गया हो। उस समय हमारी रक्षा हेतु वही अदृश्य निर्देश हमें सचेत कर देता है। उसी विराट शक्ति सागर की एक बूँद पाकर हम महाशक्ति के स्वामी बन जाते है। संसार के प्रत्येक सबलतम संघर्ष का सामना करने के लिए सक्षम और समर्थ हो जाते है। उसी अदभुत शक्ति और आत्मविश्वास की ऊर्जा लेकर व्यक्ति अपना प्रत्येक कार्य सम्पन्न करता है और मार्ग में आने वाली बाधाओं व विपदाओं को परास्त करता हुआ अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होता चला जाता है। ऐसे ही कर्मठ और परिश्रमी लोगों का भविष्य उज्ज्वल होता है और उनकी सफलता में रंचमात्र भी संदेह नही रहता है।

इस संसार के प्रत्येक सुख का आनन्द भोगने का सर्वप्रथम अधिकार आपका है, क्योंकि आपने इन्हे कठोर परिश्रम के पश्चात प्राप्त किया है। जो लोग कठिन परिश्रम करते है, चोटी का पसीना एड़ी तक बहा देते है, काम करते समय रात–दिन एक कर देते है, वे ही सुख–समृद्धि के सच्चे हकदार समझे जाते है। परिश्रम से प्राप्त समृद्धि से व्यक्ति को जितना सुख, संतोष और आनंद मिलता है उसकी तुलना में संसार का कोई वैभव हल्का महसूस होता है।

सेवा की डोर बंधी भारत से कनाडा तक

–दिव्यांग रजत को मातृभूमि में मिली राहत...छलकी मां की आंख

mn;ijA कनाडा के ओनटेरियो राज्य के मारखन शहर के एक बीमा कम्पनी में कार्यरत मानक पटेल एंव उनकी पत्नी नीता कई जगह असफल ईलाज करवाने के बाद अपने युवा पुत्र रजत को लेकर नारायण सेवा संस्थान पहुंचे। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि रजत बचपन से ही ना सिर्फ मानसिक रूप से अक्षम अपितु दोनों पेरो से भी जन्मजात पोलियों से ग्रस्त था। दशा ऐसी की पेरों में केंची लग जाती और रजत दो कदम भी नही चल पाता। रजत की मां नीता ने निदेशक वन्दना अग्रवाल से मन की पीडा बांटते हुए कहा–"रजत को गिरते देख... आंखे भर आती हैं....सभी और से निराशा ही हाथ लगी।" पर नारायण सेवा संस्थान में वरिष्ठ सर्जन डॉ. ए.एस. चुण्डावत द्वारा रजत का सफल ऑपरेशन/सर्जरी की गई।

रजत के माता–पिता ने संस्थान के निःशुल्क सेवा कार्या की व्यवस्था आदि को विश्व का अनुठा कार्य बताते हुए कहा कि हम यहां से एक नया रजत लेकर जा रहे हैं। संस्थान संस्थापक कैलाश मानव ने रजत को नव जीवन के लिये शुभकामनाऐ एवं चिकित्सा इकाई को बधाईयां दhA

सभी की अपनी–अपनी उपयोगिता है

प्रकृति ने इस धरती पर जो कुछ भी रचा है, उसमें से कुछ भी व्यर्थ नहीं है। सबकी अपनी–अपनी उपयोगिता है। जी हाँ, हम भी। भले ही हम सभी पेड़ों को एक जैसा मान लें, लेकिन वे एक जैसे होते नहीं हैं। यहाँ तक एक ही श्रेणी की वस्तुएँ एक जैसी नहीं होती। क्या आप विश्वास करेंगे कि खरबूजे तक के बारह सौ प्रकार होते हैं ? क्या सभी आमों का रस एक जैसा होता है ? इसका मतलब यह हुआ कि प्रकृति कभी भी अपने आपको ज्यों का त्यों नहीं दोहराती। वह हरेक के जरिए कुछ न कुछ नया रचती है। जी हाँ, इसी तरह हम को उसने मनुष्य तो बनाया है, लेकिन कुछ न कुछ नया भी बनाया है। हम दूसरों की तरह होकर भी पूरी तरह दूसरों की तरह नहीं हैं। हम किसी न किसी मायने में दूसरे से ठीक उसी प्रकार अलग हैं, जैसे लंगड़ा आम चौसे से अलग होता है। कहने को तो दोनों ही आम हैं, लेकिन स्वाद दोनों का एक नहीं है।

सफलता प्राप्ति का आध्यात्मिक नियम

सफलता का आध्यात्मिक नियम "अनासक्ति का नियम" है। इस नियम के अनुसार व्यक्ति को भौतिक संसार में कुछ भी प्राप्त करने के लिए वस्तुओं के प्रति मोह त्यागना होगा। लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं है कि वह अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए अपने उद्देश्यों को ही छोड़ दे। उसे केवल परिणाम के प्रति मोह को त्यागना है। व्यक्ति जैसे ही परिणाम के प्रति मोह छोड़ देता है। उसी समय वह अपने एकमात्र उद्देश्य को अनासक्ति से जोड़ लेता है। तब वह जो कुछ भी चाहता है, उसे स्वयमेव मिल जाता है।

अनासक्ति के नियम का पालन करने के लिए निम्न बातों पर ध्यान देना होगा, आज मैं अनासक्त रहने का वायदा करता हूँ। मैं स्वयं को तथा आसपास के लोगों को पूर्ण रूप से स्वतंत्र रहने की आजादी दूँगा। चीजों को कैसा होना चाहिए, इस विषय पर भी अपनी राय किसी पर थोपूंगा नहीं। मैं जबरदस्ती समस्याओं के समाधान खोजकर नयी समस्याओं को जन्म नहीं दूँगा। मैं चीजों को अनासक्त भाव से लूँगा। सब कुछ जितना अनिश्चित होगा। मैं उतना ही अधिक सुरक्षित महसूस करूँगा क्योंकि अनिश्चितता ही मेरे लिए स्वतंत्रता का मार्ग सिद्ध होगी। अनिश्चितता को समझते हुए मैं अपनी सुरक्षा की खोज करूँगा।

अधर्म है आश्रित का त्याग

महाराज युधिष्ठिर ने जब सुना कि श्रीकृष्ण ने अपनी लीला का संवरण कर लिया है और यादव परस्पर की कलह से ही नष्ट हो चुके है, तब उन्होंने अर्जुन के पौत्र परिक्षित का राजतिलक कर दिया। स्वयं सब वस्त्र एवं आभूषण उतार दिए। मौनव्रत लेकर केश खोले, वीर – सन्यास लेकर वे राजभवन से निकले और उत्तर दिशा की ओर चल पडे। उनके शेष भाइयों तथा द्रौपदी ने भी उनका अनुगमन किया।

धर्मराज युधिष्ठिर ने सब माया – मोह त्याग दिया था। उन्होंने न भोजन किया, न जल पीया और न विश्राम किया। बिना किसी ओर देखे या रूके वे बराबर चलते ही गए और हिमालय में बद्रीनाथ से आगे बढ़ गए। उनके भाई तथा रानी द्रौपदी भी बराबर उनके पीछे चलते रहे। सत्यपथ पार हुआ और स्वर्गारोहण की दिव्य भूमि आई।

द्रौपदी, नकुल, सहदेव, अर्जुन – ये क्रमशः गिरने लगे। जो गिरता था, वह वही रह जाता था। उस हिम समाधि प्रदेश में गिरकर फिर उठने की चर्चा ही व्यर्थ हैं। शरीर तो तत्काल हिम समाधि पा जाता है। उस पावन प्रदेश में प्राण त्यागने वाले को स्वर्ग की प्राप्ति से भला कौन रोक सकता है। युधिष्ठिर न रूकते थे और न गिरते हुए भाइयों की ओर देखते ही थे। वे राग – द्वेष से परे हो चुके थे। अंत मे भीमसेन भी गिर गए। युधिष्ठिर जब स्वर्गारोहण के उच्चतम शिखर पर पहुँचे, तब भी अकेले नहीं थे। उनके भाई और रानी द्रौपदी मार्ग में गिर चुके थे, लेकिन एक कुत्ता उनके साथ था। यह कुत्ता हस्तिनापुर से उनके पीछे – पीछे आ रहा था।

उस शिखर पर पहुँचते ही स्वयं देवराज इंद्र विमान में बैठकर आकाश से उतरे। उन्होंने युधिष्ठिर का स्वागत करते हुए कहा – "धर्मराज, आपके धर्माचरण से स्वर्ग अब आपका है। विमान में बैठिए।" युधिष्ठिर ने जब अपने भाइयों तथा द्रौपदी को भी स्वर्ग ले जाने की प्रार्थना की तो देवराज इंद्र बोले –"धर्मराज, वे तो पहले ही वहां पहुँच गए हैं।"

तब युधिष्ठिर ने दूसरी प्रार्थना की –"भगवन्, इस कुत्ते को भी विमान में बैठा लें।"

इंद्र ने कहा – "आप धर्मज्ञ होकर ऐसी बात क्यों करते हैं ? स्वर्ग में कुत्ते का प्रवेश कैसे हो सकता है ?" यह अपवित्र प्राणी मुझे देख सका, यही बहुत है। युधिष्ठिर बोले "यह मेरा आश्रित है। मेरी भक्ति के कारण ही नगर से इतनी दूर मेरे साथ आया है। आश्रित का त्याग अधर्म है। इस आश्रित का त्याग मुझे अभीष्ट नहीं, इसके बिना मैं अकेले स्वर्ग नहीं जाना चाहता।" युधिष्ठिर की बात सुनकर देवराज बोले – "राजन, स्वर्ग की प्राप्ति पुण्यों के फल से होती है। यह पुण्यात्मा ही होता तो इस अधम योनि मे जन्म ही क्यों लेता ,"

इस पर युधिष्ठिर बोले – "भगवन्, मैं अपना आधा पुण्य इसे अर्पित करता हूँ।" "धन्य हो, धन्य हो युधिष्ठिर ! मैं तुम पर अत्यंत प्रसन्न हूँ।" युधिष्ठिर ने देखा कि कुत्ते का रूप त्यागकर साक्षात् धर्म देवता उनके सम्मुख खड़े हो उन्हें आशीर्वाद दे रहे हैं।

मुस्कान मानवता की

¼ekuo /keZ Ük[kyk dk "k"Ve ¼6½ i"i½

❖परम आनंद ईश्वर की शरणागति है ❖

आपकी धर्म–पत्नी जो भगवान ने विवाह कर दिया उनको साथ निभाना चाहिए। पिताजी को भी निभाइये, धर्म–पत्नी जी को भी निभाइये, माता जी को भी निभाइये, भाई को भी निभाइये, बेटे को भी निभाइये रास्ते ईश्वर निकाल लेगा। रूलाएगा, कभी लगेगा, बहुत अन्धेरा छा गया, लेकिन आप को हारने नहीं देगा।

घोर जंगल में जहाँ चारों ओर अन्धेरा हैं। शंकाओं के लकड़बग्गों को आप दूर भगाइये। अविश्वास के चमगादड़ों को, घृणा, नफरत के इन सियारों को अपनी हुंकार से दूर भागते हुए आइये। शुद्ध शाकाहारी शेर की तरह ईश्वर की कृपा की अनुभूति करते हुए। उस शेर की तरह जो नरसी मेहता के चरणों में बैठ गये। पीपा भगत के चरणों में बैठ गये। नरसी मेहता का पूर्व जन्म था, जो पीपा भगत के चरणों में बैठ गए।

vkb;s ge Hkh Hkxoku ds pj.kksa esa cBsA
lc tc eatqy xVd dj yh 'kj.k vc vkidhA
ikj djuk ;k u djuk] nkuks ejth vkidh]
nkuks ejth vkidhA

प्रभु! आप डूबो भी दोगे तो भी मैं आपका गुण गाऊँगा। क्योंकि आप मुझे मेरे अच्छे के लिये डूबों रहे हो। मैं डूब जाऊँगा, आपकी जय–जयकार करता हुआ। इसके बाद आप मुझे नया जीवन देंगे। मेरे कपड़े बढ़िया देंगे, नये कपड़े देंगे। हां हां हां! पुराने कपड़े जीर्ण–शीर्ण को लेकर आप नये कपड़े, पहना देंगे।

परमहंस योगानन्द जी महाराज ने, जब 15 शिष्यों के सामने कह रहे थे, बेटा तुम क्या बनना चाहते हो? रामलाल ने कहाँ मैं डॉक्टर बनना चाहता हूँ। अच्छा–अच्छा डॉक्टर बन जाओगे, सेवा करते रहना भई! गरीबों की। मोहनलाल तुम, गुरुदेव में शिक्षक बनना चाहता हूँ। हाँ, शिक्षक बनना तो बहुत अच्छे संस्कार देना बच्चों को व अच्छी शिक्षा देना। पन्नालाल खड़ा हुआ, गुरुजी–गुरुजी मैं इन्जीनियर बनना चाहता हूँ। गुरुजी के मुँह से निकल गया अरे! पन्नालाल पन्द्रह दिन में तो तेरी मृत्यु आने वाली हैं, पन्नालाल। जैसे ही सुना। सारे शिष्य रोने लगे, पन्नालाल रोने लग गया। गुरुजी के भी आँखों में आँसू आ गये। गुरूजी कमरे में चले गये। पन्नालाल ने किवाड़ खटखटाए। गुरुजी–गुरूजी मुझे बचा लो। मैं मरना नहीं चाहता, गुरूजी मुझे बचा लो।

गुरुजी ने गले से लगा लिया, गुरूजी मुझे बचा लेना और यदि मैं मर भी गया तो अगले जन्म में जहाँ भी आऊंगा, आप मुझे पहचान लेना। बेटा! पन्द्रह दिन तूं इस आश्रम से बाहर मत जाना। पन्द्रह दिन इस आश्रम से बाहर मत जाना। तेरी मौत टल जाएगी।

शिक्षकों को बुला के रांची में योगदा–सत्संग के परम् पूज्य गुरुदेव परमहंस योगानन्द जी ने लिखा, कहा देखिये, शिक्षक महोदय! पन्द्रह दिन तक पन्नालाल को बाहर मत भेजना। नाम पन्नालाल का हैं, या नाम मोहनलाल, मंगनलाल का हैं, कोई फर्क नहीं पड़ता। गुरूजी यात्रा पर पधार गये। तैरहवे दिन पन्नालाल जी के पिताजी आए। मेरे बेटे को मैं लेने आया हूँ, दो घण्टे बाद मेरी बस हैं, कलकत्ते जाना हैं, इसकी माँ बहुत याद कर रही हैं।

नहीं नहीं नही। इसको मत ले जाओं। हमारे गुरूजी साफ मना कर के गये। पन्द्रह दिन नहीं। दो दिन और। आप कौन होते हैं? बेटा मेरा हैं, थाने में चले गए। पुलिस को जा के कहे, मेरे बेटे को ले जाने नहीं देते। बहुत दबाव पड़ा ठीक हैं, भई ले जाओं। ले गए, और पन्द्रहवे दिन मौत ने पन्नालाल को छीन लिया। तीन घण्टे बाद जब हावड़ाब्रिज के आस–पास से उसके पिता जी गमछा कन्धे पे डाले हुए, बच्चे का दाह–संस्कार करने के बाद जब वापिस लौट रहे थे। कहते हैं कि, गुरुजी ने उनको देखा। उनके कॉलर पकड़ के झिझोड़ लिया। अरे! तुम मेरे शिष्य को आश्रम से क्यों ले आए? मार डाला मेरे शिष्य को।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक-सोहन लाल गाडरी
संपादक-लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी-घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक-न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक-कमलादेवी, मुद्रण स्थल-13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर-3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल- ई-डी-71 बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर-6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक-लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. - 0294-6622222 मो.-09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com